खेलकूद में दवाइयों का दुरुपयोग

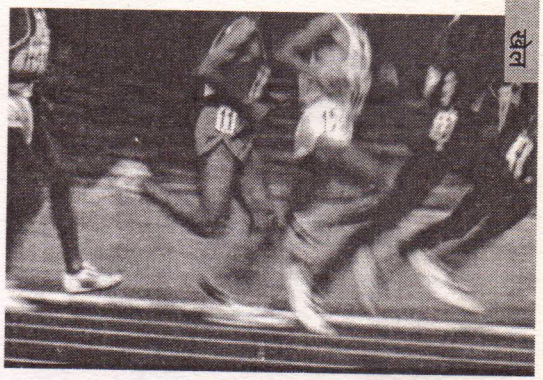

प्रवीण कुमार

आगामी अफ्रीकी-एशियाई खेलों में देश की आशाएं कुंजरानी देवी पर टिकी थीं लेकिन जब सीनियर एशियाई भारोत्तोलन प्रतियोगिता के दौरान परीक्षण किए गए, तो उसके शरीर में प्रतिबंधित दवाई स्ट्रायक्नीन पाई गई। दक्षिण कोरिया में जुलाई में आयोजित इन खेलों में कुंजरानी देवी ने 48 कि.ग्रा. श्रेणी में स्वर्ण पदक जीता था। दरअसल, अंतर्राष्ट्रीय भारोत्तोलन फेडरेशन को उस पर पिछले छह माह से शक था। कुंजरानी देवी ने इस प्रतियोगिता में अपनी पेशाब के नमूने 'ख' की जांच से इंकार कर दिया था। होता यह है कि हर जीतने वाले एथलीट को प्रतिस्पर्धा के फौरन बाद पेशाब के दो नमूने 'क' और 'ख' सीलबंद शीशियों में देने होते हैं।

मगर कुंजरानी तो इस पहाड़ की दिखती हुई चोटी भर हैं। पटियाला के राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान में परीक्षण के दौरान भारोत्तोलक पी. सैलजा का परीक्षण भी धनात्मक था। सैलजा के साथ प्रशिक्षण ले रहे इस पुरुष एथलीट तो परीक्षण की भनक लगते ही संस्थान छोड़कर चले गए थे।

अचरज की बात यह है कि नई दिल्ली के नेशनल स्टेडियम की प्रयोगशाला में कुंजरानी को पेशाब परीक्षण में पास कर दिया गया था। हेल्थ फिटनेस ट्रस्ट की एक याचिका पर फैसला सुनाते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय ने 21 अगस्त के दिन सरकार को आदेश दिया कि वह देश में औषधि जांच हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रयोगशाला स्थापित करे। पूर्व चैम्पियन धावक पी.टी. ऊषा ने टिप्पणी की है कि भारत की प्रयोगशाला मान्यता प्राप्त नहीं है।

प्रदर्शनवर्धक दवाइयों का सेवन प्रतिस्पर्धात्मक खेलकूद में आज एक आम बात हो गई है। कनाडा में अगस्त में आयोजित विश्व चैम्पियनशिप में दस एथलीटों के परीक्षण से पता चला था कि उन्होंने प्रतिबंधित हॉर्मोन इरिथ्रोपोएटीन (इ.पी.ओ.) का सेवन किया था। परीक्षणों से पता चला था कि उनके खून में लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या बहुत अधिक है। यह इ.पी.ओ. सेवन का संकेत हो सकता है लेकिन दिक्कत यह है कि शरीर में इ.पी.ओ. कुदरती तौर पर भी पाया जाता है।

द्वितीय विश्व युद्ध तक ऐसे बहुत कम रसायन उपलब्ध थे और उनकी क्षमता भी काफी कम थी। उस समय फौजियों में चौकन्नापन बढ़ाने और थकान को टालने के लिए एम्फीटेमीन्स का उपयोग किया गया था। इसके बाद 40 व 50 के दशक में तो एम्फीटेमीन्स एथलीटों की पसंदीदा दवाई बन गई। खास तौर से साइकिल दौड़ में बेहतर प्रदर्शन के लिए इनका इस्तेमाल होने लगा। 1960 के दशक में दवाइयों को आम तौर पर ज़्यादा सकारात्मक नज़रिए से देखा जाने लगा था। इसकी वजह से खेलकूद में भी इनका उपयोग बढ़ने लगा। औषधि विज्ञान में तरक्की के साथ एथलीटों को ज़्यादा विकल्प उपलब्ध हो गए। कोई खास प्रभाव पैदा करने के लिए विशिष्ट दवाइयां उपलब्ध हो गईं।